

---

# Shri Sitakripakataksha Stotram

श्रीसीताकृपाकटाक्षस्तोत्रम्

## Document Information

---

Text title : Sita Kripakataksha Stotram

File name : sItAkripAkaTAKShastotram.itx

Category : devii, devI, sItA

Location : doc\_devii

Proofread by : Mrityunjay Pandey

Latest update : July 4, 2024

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

July 4, 2024

*sanskritdocuments.org*

---

---

## Shri Sitakripakataksha Stotram

---

### श्रीसीताकृपाकटाक्षस्तोत्रम्

---



मुनीन्द्रवृन्दवन्दिते त्रिलोकशोकहारिणि  
प्रसन्नवक्त्रपङ्कजे निकुञ्जभूविलासिनि ।

विदेहभूपनन्दिनि नृपेन्द्रसूनुसङ्गते

कदा कश्चिदसीढ मां कृपाकटाक्षभाजनम् ॥ १ ॥

महामुनीश्वरों द्वारा वन्दित, त्रिभुवन के शोक का हरण करने वाली, प्रसन्न मुष्कारविन्द वाली, निकुञ्ज मन्दिर में विलास करने वाली श्रीयकवर्ति कुमार की संगिनी हे श्रीविदेहराज नन्दिनी जू ! आप अपनी कृपा कटाक्ष का पात्र मुझे कब बनावेंगी ?

अशोकवृक्षवल्लरीवितानमण्डपस्थिते

प्रवालजालपल्लवप्रभारुणाङ्घ्रिकोमले ।

वराभयस्फुरत्करे प्रभूतसम्पदालये

कदा कश्चिदसीढ मां कृपाकटाक्षभाजनम् ॥ २ ॥

अशोक वृक्ष की लताओं के वितान मण्डप में विराजमान प्रवाल की लालिमा के समान अरुणारे, कोमल यरणकमल वाली, सदैव अभय वरदान देने को जिनका कर कमल कृङ्कता रहता है, अनन्त सम्पत्ति की महामन्दिर हे श्री जू ! आप अपनी कृपा का पात्र मुझे कब बनावेंगी ?

तडित्सुवर्ण चम्पक प्रदीप्त गौरविग्रहे

मुष्प्रभापरास्त कोटि शारदेन्दु मण्डले ।

विचित्र चित्र सञ्चरञ्चकोर शाव लोचने

कदा कश्चिदसीढ मां कृपाकटाक्षभाजनम् ॥ ३ ॥

बिजली-सुवर्ण तथा चम्पा पुष्प के समान गौरांगी श्रीमुष्प की प्रभा से करोड़ों शरञ्चन्द्रमाओं की शोभा को लज्जित करने वाली विचित्र चित्रित वस्त्रालङ्कृत, यकोर बालिका के समान नेत्रों वाली, हे श्री जू ! आप अपनी कृपा का पात्र हमको कब बनावेंगी ?

अनङ्गारङ्गमङ्गलप्रसङ्गमङ्गुरध्रुवां (मङ्गुरध्रुवां)

सुविभ्रमस्तु सम्भ्रमद् दृगन्तबाणपातनैः ।

निरन्तरं वशीकृतावधेशभूपनन्दने

कदा कश्चिदसीढ मां कृपाकटाक्षभाजनम् ॥ ४ ॥

मंगलमय अनंग रंग के प्रसंग पर थंयल थोभी थितवन से अवधेश नन्दन श्रीराम को निरन्तर अपने वशीभूत करने वालीं छे श्रीजू ! आप अपनी कृपा कटाक्ष का पात्र डमको कब बनावेंगी ?

मदोन्मदादियौवने प्रमोदमानमण्डिते

प्रियानुरागरञ्जिते कलाविलासपण्डिते ।

अनन्यधन्यकुञ्जराञ्जि कामकेलिकोविदे

कदा कश्चिदसीढ मां कृपाकटाक्षभाजनम् ॥ ५ ॥

यौवन मदोन्माद से मण्डित, प्रमोद बढःाने वालीं, मान लीला में पण्डित, प्रियतम के अनुराग को बढःाने वालीं सरस डास विलास क्रीडःाने में परम यतुर, अनन्य प्रीति पूर्ण कामकेलि में अत्यन्त प्रवीण, छे श्री जू ! आप अपनी कृपा पूर्ण कटाक्ष का पात्र डमको कब बनावेंगी ?

विशेषडावभाव धीरडीरडारभूषिते

प्रभूतशात कुम्भ-कुम्भ कुम्भि कुम्भ सुस्तनि ।

प्रशस्तमन्दडास्ययूर्ण-पूर्णसौष्यसागरे

कदा कश्चिदसीढ मां कृपाकटाक्षभाजनम् ॥ ६ ॥

विशेष डाव भाव सम्पन्न, परमधीर, डीरा रत्नों के डारों से सुशोभित, कंथन के कलश के समान डाथी के उन्नत मस्तक को लज्जित करने वाले सुन्दर स्तनों वालीं प्रसंशनीय मन्द डास्य करती डुछं, सुभ सागर लडराने वाली छे श्री जू ! आप अपनी कृपा कटाक्ष का भाजन डमको कब बनावेंगी ?

मृणालबालवल्लरी तरङ्गरङ्गदोलिते

लताग्रलास्यलोलनीललोचनाविलोडने ।

ललल्लुलन् मिलन्मनोजमुग्धमोडमाश्रये

कदा कश्चिदसीढ मां कृपाकटाक्षभाजनम् ॥ ७ ॥

कमल नाल के तन्तु जैसे सुकोमल, प्रेमरस तरंग के रंग से सुरञ्जित जिनकी लुजावली ललित लताओं के समान लावण्य सम्पन्न छै, श्याम अंजन सी कजरारी सुन्दर नीली जिनकी आँपें छै, जिनकी भाव भरी मधुर दृष्टि को देखकर प्रियतम विमुग्ध डोकर मनोज के मोड में पडः जाते छै, अैसी छै श्री जू ! आप अपनी कृपा कटाक्ष का पात्र डमको कब बनावेंगी ?

सुवर्णमालिकाञ्चिते त्रिशेभकम्बुकण्ठके

त्रिसूत्रमङ्गलीगुणत्रिरत्नदूरदीप्यते ।

सलोलनीलकुन्तले प्रसूनगुच्छगुम्फिते

कदा कश्चिदसीढ मां कृपाकटाक्षभाजनम् ॥ ८ ॥

सोने की मालिका (कण्ठी) से सुशोभित, तीन रेखा युक्त शंभु के समान सुन्दर ग्रीवा (कण्ठ) वाली, मंगलसूत्र के तीन लङ्कियों से अलंकृत जिनके तीनों रत्नों का दिव्य प्रकाश दूर से ही चमकता है, सुन्दर घुंघराली काली रत्न तथा पुष्पों से गूथी हुई जिनकी वेणी है, ऐसी हे श्री जू ! अपनी कृपा का भाजन उमको कब बनावेंगी ?

नितम्बभिम्बलम्बमानपुष्पमेभलागुणे

प्रशस्तरत्नकिङ्किणीकलापमध्यमञ्जुले ।

करीन्द्रशुण्डदण्डिकावरोडशोभगौरके

कदा कश्चिशील मां कृपाकटाक्षभाजनम् ॥ ८ ॥

पृथुल-नितम्बों पर किंकण्ठी जाल से मंजुल बनी हुई रत्न जटित (करघनी) लहराती है तथा ढाथी के सुण्ड के समान सुन्दर सुशोभित गौर जंघाओं वाली, हे श्री जू ! अपनी कृपा का पात्र उमको कब बनावेंगी ?

अनेकमन्त्रनादमञ्जुनूपुरारवस्मले

सुराजराजसंशानिःक्वणातिगौरवे ।

विलोलहोमवल्लरीविडम्बिथारुच्यङ्कमे

कदा कश्चिशील मां कृपाकटाक्षभाजनम् ॥ १० ॥

अनेक मंत्रों की मंजुल ध्वनि करने वाले जिनके यरण नूपुर है तथा राजहंस को भी लज्जित करने वाली जिनकी मधुर याल है, होमवल्लरी को भी लज्जित करने वाली जिनकी टेल कान्ति है, ऐसी हे श्री जू ! आप अपनी कृपा कटाक्ष का पात्र उमको कब बनावेंगी ?

अनन्तकोटिविष्णुलोकनम्रपद्मार्थिते

डिमाद्रिजापुलोमजाविरञ्चिजवरप्रदे ।

अपारसिद्धिवृद्धिद्विग्धसत्पदाङ्गुलीनभे

कदा कश्चिशील मां कृपाकटाक्षभाजनम् ॥ ११ ॥

अनन्त कोटि विष्णु लोक की लक्ष्मीज्जिनके यरणों की विनीत भाव से वन्दना करती है, पार्वतीज्ज-धन्द्राणीज्ज तथा सावित्रीज्ज को भी वरदान देने वाली सिद्धि ऋद्धि की वृद्धि करने वाली जिनके सुधारु यरणों की अंगुलियों की नभावली है, ऐसी है श्रीकिशोरीज्ज ! आप अपनी कृपा कटाक्ष का भाजन उमको कब बनावेंगी ?

भभेश्वरी द्विश्वरी स्वधेश्वरी सुरेश्वरी

त्रिवेदभारतीश्वरी प्रमाणाशासनेश्वरी ।

रमेश्वरी क्षमेश्वरी प्रमोदकाननेश्वरी

कदा कश्चिशील मां कृपाकटाक्षभाजनम् ॥ १२ ॥

हे यज्ञेश्वरी ! हे द्विया योगेश्वरी ! हे स्वाहा स्वधेश्वरी ! हे सुरेश्वरी ! हे तीनों वेद विद्याओं की ईश्वर ! हे प्रमाणेश्वरी ! हे शासनेश्वरी ! हे रमेश्वरी ! हे क्षमेश्वरी ! हे प्रमोदकाननेश्वरी ! आप अपनी कृपा कटाक्ष का भाजन उमको कब बनावेंगी ?

धृतीदमद्भुतस्तव निशम्य भूमिनन्दिनी  
करोति सन्ततं जनं कृपाकटाक्षभाजनम् ।

भवत्यनेकसञ्चितं त्रिरूपकर्मनाशनं

लभेतथा नरेन्द्रसूनु मन्दिरप्रवेशनम् ॥ १३ ॥

धृति अद्भुत स्तोत्र को सुनकर श्रीभूमिनन्दिनी सर्वदा अपने शरणागत जन को अपनी कृपा कटाक्ष का पात्र बनाती हैं । अनेक जन्मों के संश्रित पापों का नाश हो जाता है, त्रिगुणात्मक कर्म नष्ट हो जाते हैं तथा श्री राजेन्द्रकुमार श्रीरामजी के श्रीकनकभवन मन्दिर में प्रवेश होता है । तब धृति प्रकार का स्तोत्र पाठ करने वाले उमको आप अपनी कृपा कटाक्ष का पात्र बनावेंगी ।

राकायां य नवभ्यां य दशभ्यां य विशुद्धधीः ।

अेकादश्यां त्रयोदश्यां यः पठेत्साधकः सुधीः ॥ १४ ॥

यं यं कामयते कामं तं तं प्राप्नोति साधकः ।

सीताकृपाकटाक्षेण भक्तिः स्यात्प्रेमलक्षणा ॥ १५ ॥

पूर्णिमा को, नवमी को, दशमी को शुद्ध बुद्धि पूर्वक अेकादशी को तथा त्रयोदशी को, जो कोई पवित्रान्तःकरण से धृति का पाठ करता है, वह जो-जो चाहेगा वह प्राप्त हो जायेगा । तथा श्रीसीताजी के कृपा कटाक्ष से प्रभु के चरणों में प्रेम लक्षणा भक्ति उत्पन्न होती है ।

उरुदग्ने नाभिदग्ने वृद्धे कण्ठदग्नेके ।

सीताकुण्डे जले स्थित्वा यः पठेत्साधकः सतम् ॥ १६ ॥

तस्यसर्वार्थसिद्धिः स्यात् वाक्यसामर्थ्यमेव य ।

अैश्वर्यं य लभेत्साक्षात् दृशापश्यतिजनकीम् ॥ १७ ॥

घुटन पर्यन्त, नाभिपर्यन्त, वृद्ध पर्यन्त तथा कण्ठपर्यन्त श्रीसीता-कुण्ड के जल में ञडा डोकर जो साधक १०८ बार धृति का पाठ करेगा, उसके सभी मंगल मनोरथ पूर्ण होते हैं तथा वचन सिद्धि का समर्थ प्राप्त होता है । लोक में देव दुर्लभ परम अैश्वर्य पाता है तथा धन्डी आँधों से श्रीडिशोरीजी का दर्शन प्राप्त कर लेता है ।

तेन सा तत्क्षणादेव तुष्टा दत्ते मडावरम् ।

तेन पश्यति नेत्राभ्यां तत्प्रियं श्यामसुन्दरम् ॥ १८ ॥

नित्य लीला प्रवेशं य ददाति श्रीरघूत्तमः ।


अतः परतरं प्रार्थ्यं वैष्णवानां न विद्यते ॥ १९ ॥

अनन्त करुणामयी श्रीडिशोरीजी प्रसन्न डोकर उसको वरदान देती हैं जिसेके प्रभाव से प्राणप्रिय श्याम सुन्दर श्रीरामजी को धन आँधों से दैभकर जो वृत्तार्थ हो जाता है श्रीरघुनाथजी कृपा कर उसको नित्य लीला में प्रवेश करने का अधिकार प्रदान करते हैं, धृतिसे बढःकर श्रीवैष्णव को अन्य कुछ भी प्रार्थनीय पदार्थ है ही नहीं, अैसा अति दुर्लभ तत्त्व रडस्थ पाकर जो वधन्य हो जाता है ।


एति श्रीसीताकृपाकटाक्षस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

Encoded and proofread by Mrityunjay Rajkumar Pandey

---

——  
*Shri Sitakripakataksha Stotram*

pdf was typeset on July 4, 2024

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

